शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'पथिक' खण्डकाव्य

कवि - श्री रामनरेश त्रिपाठी

प्रश्न: 'पथिक' ने प्राकृतिक सौन्दर्य को नारी सौन्दर्य से बढ़कर माना है, सिद्ध करें।

उत्तर:- हिन्दी साहित्य के महान कवि श्री रामनरेश त्रिपाठी जी ने अपने 'पथिक' खण्ड काव्य में प्रकृति का मनोरम दृश्य उपस्थित किया है। खण्ड काव्य का नायक 'पथिक' का कहना है कि प्रकृति का सौन्दर्य नारी सौन्दर्य से बढ़कर है। उसको सिद्ध करने के लिए भारतीय सौन्दर्य चेतना का मानदण्ड रूप रूढ़ प्रतीकों का बड़ा ही अच्छा संकेत किया गया है। नारी मुख एवं हथेलियों की उपमा कमल से देह की चम्पा की बत्तियों की विनम्रता से, कमर की सिंह की कमर से, नाभि की कुण्ड से, देहयष्टि की बल्लरी से, स्तन की पर्वत से, गरदन की शंख से, गालों की गुलाब की कलियों से, मुखड़े की चाँद से, होठों की किसलय से, दंतपंक्ति की अनार के दानों से, बोली की कोकिल-स्वर से, नासिका की सुग्गे की नाक से, आँखों की हिरनी की आँखों से, व्यक्तित्व की पताका से, मुस्कान की मोती से और केश-जाल की भ्रमर समूह से दी गयी है। पथिक का कहना है प्राकृतिक उपादानों से नारियों के सौन्दर्य की तुलना की गयी है। ऐसे में नारी का सौन्दर्य प्रकृति के सौन्दर्य से श्रेष्ठ कैसे हो सकता है। पथिक अपनी पत्नी के सौन्दर्य के सन्दर्भ में कहता है कि तुम लोगों का सौन्दर्य अस्थिर है जबकि प्रकृति का सौन्दर्य शाश्वत प्रतीत होता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ

05/11/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी
जयद्रथ-वध , काव्य खण्ड
कवि मैथिलीशरण गुप्त

लख प्राकृतिक छवि मार्ग में गिर-वन-नदी-नभ की नयी,
विस्मित हुए अत्यन्त अर्जुन आत्म विस्मृति हो गयी।
उस काल उनका शोक भी चिन्ता सहित जाता रहा,
हो प्रेम से पुलकित उन्होंने यों रमापति से कहा-

भावार्थ

उत्तर:- भगवान शंकर के पास हिमालय पर्वत पर श्री कृष्ण अर्जुन को साथ लेकर जा रहे हैं। अर्जुन ने मार्ग में जो कुछ देखा उसी का वर्णन कवि अर्जुन के मुख से कराते हुए कहता है कि अर्जुन ने मार्ग में प्रकृति के सौन्दर्य को देखकर काफी प्रसन्न है। पर्वत, वन, नदी और आकाश की शोभा प्रति पल नई-नई ही दिखलाई पड़ रही है। वह उस सौन्दर्य को देखकर बहुत ही विस्मय हुए और उस दृश्य में इतने लीन हो गये कि अपने आपको ही भुला बैठे। उस समय उनका समस्त दुःख भी चिन्ता के साथ समाप्त हो जाता है। तब उन्होंने प्रसन्न होकर श्री कृष्ण से कहा कि आपकी माया से मैं काफी प्रभावित हूँ।

प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से समस्त भारतवासियों को कवि यह सन्देश देना चाहता है कि अब हम लोगों को भी भारत की गौरवशाली परम्परा को ध्यान में रखते हुए बाह्य शक्तियों को अपनी मातृभूमि से दूर करने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिए। तत्कालीन राष्ट्रवादी चिंतकों ने देश-भक्तों से आह्वान किया था कि अब हमें विदेशी शक्तियों द्वारा किये जा रहे अपमान का मुँह-तोड़ जवाब देने का अवसर आ गया है। हम एक साथ मिलकर अपने शत्रुओं को मार भगाने में सक्षम हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर कवि राष्ट्र भक्तों को प्रेरित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 04/11/20
रा० ज० सं० महावि० दुखसेना, प्रतियाँ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

दिगंत - भाग - 2 - गद्य भाग

लेखक - ओमप्रकाश वाल्मीकि

महत्वपूर्ण व्याख्या :-

प्रश्न :- "तेरा तो खानदानी काम है जा फटाफट लगा जा काम पे"

उत्तर :- प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-2 के जूठन शीर्षक पाठ से ली गयी है। इसके लेखक आधुनिक हिन्दी साहित्य के महान साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि जी हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक ने समाज के कुरूप चित्र को चित्रित करते हुए सामाजिक बुराईयों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। यह प्रसंग हेडमास्टर और लेखक के बीच किए गए अमानवीय व्यवहार को लेकर है।

प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से यह बात स्पष्ट झलकती है कि जब हेडमास्टर साहब लेखक की जाति के बारे में जान जाते हैं कि यह अछूत जाति का है। तब उस पर धौंस जमाते हुए कहते हैं कि तू तो चूहड़ है। तुम्हारा यह खानदानी काम साफ-सफाई करना है न कि पढ़ना। अतः तुम सफाई के काम में फटाफट लग जा। पूरे स्कूल को शीशे की तरह सफाई करके चमका दो। प्रतिदिन लेखक से ही हेडमास्टर साफ-सफाई का काम करवाना चाहते हैं। अन्दर ही अन्दर भयभीत होकर लेखक मन मारकर यह काम करता है। स्कूल साफ करने बाद पूरे मैदान को भी साफ करने का वे आदेश देते हैं। धूल से चेहरा, सिर ढँक गया था। जहाँ सारे लड़के पढ़ते थे वहाँ वह दिनभर झाड़ू लगाता रहता था। इस प्रकार वह प्रतिदिन जाति के आधार पर जलील, शोषित होता था और गालियाँ सुनता था। इन पंक्तियों में लेखक के प्रति किए गए दुर्व्यवहारों का वर्णन है।

उक्त पंक्तियों में लेखक ने भारतीय समाज में व्याप्त जातीय असमानता, दुर्व्यवहार एवं अमानवीय शोषण-दमन, उत्पीड़न की ओर आकृष्ट

- शेष आगे —

करते हुए अपने निजी जीवन में भोगे हुए यथार्थ को रेखांकित किया है। भारतीय सामाजिक जीवन का वास्तविक स्थिति को लेखक ने पाठकों के समक्ष रखा है। यह एक गम्भीर घटना है। इसे हम सभी को मिलकर सुधारना होगा। तभी हमारा समाज एक सभ्य समाज बनेगा। समाज में समरसता का होना अतिआवश्यक है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ
05/11/20